

विश्वविद्यालय के बारे में:

कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना संसद के अधिनियम (2009 की संख्या 3) द्वारा कलबुर्गी, कर्नाटक में की गई है। यह यूजीसी की म्यारहवीं योजना अवधि के दौरान भारत सरकार द्वारा स्थापित 16 नए केंद्रीय विश्वविद्यालयों में से एक है, जो 'समानता और पहुंच' की चिंताओं को दूर करने तथा शैक्षिक रूप से कम विकसित जिलों में जहाँ राष्ट्रीय स्नातक नामांकन अनुपात औसत 11% से कम है, वहाँ लोगों को गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा प्रदान करने के लिए इसकी स्थापना की गई है। विश्वविद्यालय का 654 एकड़ परिसर है, जो कर्नाटक राज्य के कलबुर्गी जिले में कड़गंची गाँव के पास स्थित है। सीयूके नए केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के बीच कम समय में अपने स्थायी परिसर में जाने वाला पहला केंद्रीय विश्वविद्यालय है। इस विकासशील विश्वविद्यालय का मुख्य उद्देश्य स्नातक, स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट अध्ययनों में उत्कृष्टता प्राप्त करने की आकांक्षा के साथ शिक्षण, प्रशिक्षण, अनुसंधान, नवाचार और कौशल विकास को एकीकृत करना है। विश्वविद्यालय कला, मानविकी, सामाजिक विज्ञान, प्रबंधन, विज्ञान और अभियांत्रिकी इन छह प्रमुख क्षेत्रों में अध्ययन की सुविधा प्रदान करता है।

हिंदी विभाग के बारे में:

राष्ट्रीय और वैश्विक दोनों स्तरों पर वर्तमान चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए हिंदी विभाग के पाठ्यक्रम का निर्धारण किया गया है। हिंदी साहित्य और हिंदी भाषा के कार्यात्मक पहलुओं के लिए अधिक समावेशी और विस्तृत दृष्टिकोण देने के लिए विशिष्ट रूप से पाठ्यक्रम का गठन किया गया है। एम.ए. के पाठ्यक्रम में मुख्य विषयों के साथ संबद्ध, सहायक, वैकल्पिक और सामाजिक अभिविन्यास पाठ्यक्रम भी शामिल हैं। परंपरागत अध्ययन के साथ-साथ पाठ्यक्रम को रोजगारपरक बनाने एवं छात्रों के कौशल को विकसित करने हेतु पाठ्यक्रम में तुलनात्मक अध्ययन, अंतःविषयक अध्ययन, पत्रकारिता, कंप्यूटर, सिनेमा, अनुवाद अभ्यास आदि को भी जोड़ा गया है। विभाग में एम.ए. के साथ-साथ विविध विषयों के अंतर्गत सार्थक और प्रासंगिक शोध कार्यक्रम (पीएच.डी.) की भी सुविधा है। विभाग में निरंतर विविध साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

शोध पत्र आमंत्रित:

शोध पत्र हिंदी एवं अंग्रेजी भाषाओं में आमंत्रित हैं। सभी प्रतिभागियों से अनुरोध है कि वे संगोष्ठी के मुख्य विषय के साथ-साथ निम्न उप-विषयों पर अपने शोध पत्र प्रेषित कर सकते हैं:

1. बिरसा मुंडा का जीवन और विरासत
2. बिरसा मुंडा और जनजातीय अधिकार
3. भारत के इतिहास को आकार देने में जनजातीय नायकों का योगदान
4. विविध जनजातीय नायकों का जीवन वृत्त
5. भारत के इतिहास को आकार देने में जनजातीय योगदान
6. जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों का सामाजिक प्रदेय
7. जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों का राजनीतिक प्रदेय
8. जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों का ऐतिहासिक प्रदेय
9. जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों का सांस्कृतिक प्रदेय
10. जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों की प्रासंगिकता
11. जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों का संघर्ष एवं बलिदान
12. जनजातीय सांस्कृतिक विरासत और स्वदेशी प्रथाएँ
13. भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान
14. बिरसा मुंडा और समकालीन नीति-निर्माण
15. वर्तमान जनजातीय समुदाय दशा और दिशा

इनके अलावा भी मुख्य विषय से संबंधित अन्य उप-विषय हो सकते हैं।

शोध सार प्रेषण:

प्रतिभागियों को शोध सार प्रेषित करना अनिवार्य है। निर्धारित समिति द्वारा शोध सार का चयन किया जाएगा और स्वीकृति की सूचना प्रदान की जाएगी। तत्पश्चात चयनित प्रतिभागियों को पंजीकरण कर के अपना शोध पत्र प्रेषित करना होगा। शोध सार में शब्दों की मर्यादा अधिकतम 300 शब्द होगी। शोध सार cukhindiseminar@gmail.com इस ईमेल आईडी पर यूनिकोड वर्ड एवं पीडीएफ फाइल में प्रेषित करें।

शोध पत्र प्रेषण:

प्रतिभागी अपने शोध पत्र cukhindiseminar@gmail.com पर यूनिकोड वर्ड फाइल एवं पीडीएफ फाइल में प्रेषित कर सकते हैं। सभी शोध आलेखों का निर्धारित समिति द्वारा मूल्यांकन किया जाएगा। चयनित शोध आलेखों को ISBN पुस्तक में प्रकाशित करने की योजना है। सभी शोध पत्र लेखकों को प्रकाशक से पुस्तक खरीदनी होगी, संगोष्ठी आयोजकों द्वारा पुस्तक प्रदान नहीं की जाएगी।



जनजातीय गौरव संगोष्ठी



हिंदी विभाग

कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय, कलबुर्गी

एवं

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICSSR)

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित द्वि-दिवसीय

राष्ट्रीय संगोष्ठी

17-18 जुलाई, 2025

“बिरसा मुंडा तथा अन्य जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों का भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में योगदान”



मुख्य संरक्षक

प्रो. बट्टू सत्यनारायण

मा. कुलपति, कर्नाटक केन्द्रीय विश्वविद्यालय

कुलसचिव

प्रो. आर. आर. बिरादार

कर्नाटक केन्द्रीय विश्वविद्यालय

संगोष्ठी संयोजक

प्रो. संदीप रणभिरकर

हिंदी विभागाध्यक्ष

संगोष्ठी के बारे में:

ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से आजादी के लिए भारत की लड़ाई बहादुरी, निस्वार्थता और आत्मसमर्पण के असंख्य उदाहरणों की महागाथा है। विविध भारतीय जनजातियों ने स्वतंत्रता की इस महागाथा में विभिन्न तरीकों से योगदान दिया और ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अतः भारत की स्वतंत्रता समूचे भारत के सामूहिक प्रयास का परिणाम है। जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों ने भी भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया और देश के स्वतंत्रता संग्राम को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता आन्दोलन में उनका योगदान उनकी बहादुरी, बलिदान और दूरदर्शिता का प्रमाण है। उनके संघर्ष और बलिदान आज भी भारतीयों को प्रेरित करते हैं, उत्पीड़न का विरोध करने, आदिवासी अधिकारों को महत्व देने और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के महत्व की एक शक्तिशाली याद दिलाते हैं।

आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों ने ब्रिटिश उत्पीड़न, शोषण और सांस्कृतिक आधिपत्य का विरोध करते हुए भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अपने संघर्ष और बलिदान द्वारा चिह्नित उनका योगदान, स्वतंत्रता के लिए भारत की लड़ाई के व्यापक आख्यान का अभिन्न अंग है। किन्तु विडम्बना यह है कि चाहे अज्ञानवश अथवा अन्य कारणों से वे अक्सर नजरअंदाज कर दिए जाते हैं अथवा गुमनामी के अंधेरों में धकेल दिए जाते हैं। अतः भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की विविध छवियों को समझने के लिए इन गुमनाम नायकों को पहचानना और उनका सम्मान करना आवश्यक है। इन जननायकों में सभी विविध राज्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

इन्हीं स्वतंत्रता सेनानियों में आदिवासी बिरसा मुंडा एक महान व्यक्तित्व के रूप में अवस्थित हैं, जिन्होंने पच्चीस वर्ष के अपने छोटे जीवन के बावजूद, अंग्रेजों के खिलाफ भारत के प्रतिरोध पर स्थायी प्रभाव डाला। बिरसा मुंडा का आंदोलन, जिसे मुंडा विद्रोह के नाम से जाना जाता है, का उद्देश्य आदिवासी अधिकारों को बहाल करना, जबरन श्रम का विरोध करना और अंग्रेजों द्वारा थोपी गई शोषणकारी सामंती जमींदारी व्यवस्था को चुनौती देना था।

बिरसा का उलगुलान, 1899-1900 में औपनिवेशिक सत्ता और शोषणकारी ताकतों के खिलाफ एक बड़ा विद्रोह था। उनके आंदोलन ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान दिया और उनके जन्मदिन, 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाया जाता है। केवल बिरसा मुंडा ही नहीं अपितु भारत के विविध राज्यों के जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों ने बिरसा मुंडा के समान ही राष्ट्र की बलिवेदी पर अपने प्राणों को न्योछावर कर दिया और आजादी की लड़ाई को अंजाम तक पहुंचाया। इन जनजातीय नायकों में बिहार और झारखंड के तिलका मांझी, मेघालय के तिरोत सिंह, ओडिशा के वीर सुरेन्द्र साय, राजस्थान के गोविन्द गुरु, झारखंड के जतरा भगत, सिद्धू-कान्हू, मणिपुर से रानी गाइदिन्ल्यु, आंध्रप्रदेश से अल्लूरी सीताराम राजू आदि उल्लेखनीय हैं। इन जननायकों ने औपनिवेशिक सत्ता को चुनौती देते हुए जनजातीय अधिकारों को बढ़ावा दिया तथा भारत में राष्ट्रवाद के विकास में योगदान दिया।

अतः वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नई पीढ़ी को अपने इस गौरवशाली इतिहास से परिचित कराना अत्यंत आवश्यक है। इस दृष्टि से यह संगोष्ठी अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होती है जो इस विषय पर समूचे राष्ट्र के बुद्धिजीवियों को अपने विचारों के आदान-प्रदान हेतु मंच प्रदान करती है। इस संगोष्ठी में “बिरसा मुंडा तथा अन्य जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों का भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में योगदान” विषय पर एक सारगर्भित तथा सार्थक चर्चा होगी। सभी बुद्धिजीवी इस विषय से संबंधित विविध आयामों को उद्घाटित करेंगे। निश्चित ही इस विषय पर किया गया चिंतन आनेवाले समय में लाभप्रद होगा।

शोध पत्र प्रेषण से संबंधित महत्वपूर्ण तिथियाँ:

शोध सार प्रेषण की अंतिम तिथि: 30 मई, 2025

स्वीकृति की सूचना: 1 जून, 2025

शोध पत्र प्रेषण की अंतिम तिथि: 20 जून, 2025

पंजीकरण की अंतिम तिथि: 1 जुलाई, 2025

अधिक जानकारी हेतु कृपया संपर्क करें: 8503891642, 8208142434

cukhindiseminar@gmail.com

मार्गदर्शक

प्रो. विक्रम विसाजी, अधिष्ठाता, मानविकी एवं भाषा स्कूल

प्रो. बसवराज डोनूर, अंग्रेजी विभागाध्यक्ष

प्रो. शिवगंगा रुम्मा, कन्नड़ विभागाध्यक्ष

प्रो. गणेश पवार, हिंदी विभाग

आयोजन समिति

डॉ. संजीवरायप्पा एनसी, हिंदी विभाग

डॉ. गोविन्द जादव, हिंदी विभाग

डॉ. मुदनर दत्ता सर्जेराव, हिंदी विभाग

डॉ. भावना, हिंदी विभाग

पंजीकरण शुल्क: शिक्षकों के लिए - ₹. 800 /-

शोधार्थियों के लिए - ₹. 600 /-

विद्यार्थियों के लिए - ₹. 400 /-

सभी प्रतिभागियों के लिए पंजीकरण शुल्क अनिवार्य है। यदि एक से अधिक लेखक हों तो दोनों को अलग से पंजीकरण करना होगा। कृपया गूगल फॉर्म भरते समय पंजीकरण शुल्क भुगतान का स्क्रीनशॉट अवश्य जोड़ें।

पंजीकरण शुल्क भुगतान हेतु विवरण:

AC holder Name	Central University of Karnataka
AC No.	5109101000001
IFSC	CNRB0005109
Bank	Canara Bank
Branch	CUK, Kadaganchi, Kalaburagi, Karnataka

पंजीकरण फॉर्म हेतु कृपया यहाँ स्कैन करें:



अथवा पंजीकरण हेतु निम्न लिंक पर क्लिक करें:



पंजीकरण लिंक